# CHAPTER - 2

# स्मृ ति

*बोध प्रश्न*

**प्रश्न 1:**
भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था ?

**उत्तर 1:**
भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में पिटाई का डर था ।

**प्रश्न 2:**
मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्तें में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी ?

**उत्तर 2:**
जब बच्चों की टोली पढ़ने के लिए जाती थी तो उनको रास्तें में एक कुएँ के पास से होकर गुजरना पड़ता था , जिसमें एक भयंकर जहरीला साँप रहता था जिसकी फुंकार को सुननें के लिए तथा उसें तंग करने के लिए बच्चे कुएँ मे ढेला फेंकते थे ।

**प्रश्न 3:**
'साँप ने फुंकार मारी या नहीं , ढेला उसके लगा या नहीं , यह बात अब तक स्मरण नहीं '–यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है ।

**उत्तर 3:**
उपरोक्त कथन से यह पता चलता है कि वह साँप की फुंकार से किस प्रकार डर गया था । उसे इतना भी याद नहीं था कि साँप ने फुंकारा कि नही उसके कुएँ में झुकते ही उसकी टोपी में से सारी चिट्ठियाँ गिर गईं थीं जिसके कारण वह बहुत डर गया था ।

**प्रश्न 4:**
किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया ?

**उत्तर 4:**
लेखक के बड़े भाई ने उसे डाकखाने में डालने के लिए चिट्ठियाँ दी थीं जो कि बहुत ही जरूरी थीं चिट्ठियाँ कुएँ में गिर जाने के कारण लेखक को अपने बड़े भाई से पिटाई का डर था क्योंकि वह अपने बड़े भाई से बहुत डरता था और उनके डंडे की मार का ख्याल आते ही वह काँपने लगा । वह अपने बड़े भाई से झूठ भी नहीं बोल सकता था इसलिए लेखक ने कुएँ में से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय लिया ।

**प्रश्न 5:**
सँाप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या–क्या युक्तियाँ अपनाईं ?

**उत्तर 5:**
साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने निम्न युक्तियाँ अपनाईं। उसने साँप के पास पड़ी चिट्ठियों को डंडे से उठाना चाहा मगर साँप उस पर फुंकार कर आया साँप का स्थान बदलते ही लेखक ने चिट्ठियाँ उठा लीं फिर उसने डंडा उठाने के लिए उस पर मिट्टी फेंकी जिससे साँप का ध्यान फिर भटका और लेखक ने झट से डंडा उठा लिया दोनों के बीच में डंडा आ जाने से साँप उसे नहीं डस पाया इस प्रकार लेखक अपने साहसिक कार्य में सफल रहा ।

**प्रश्न 6:**
कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए ?

**उत्तर 6:**
भाई द्वारा दी गईं चिट्ठियाँ लेखक की जरा सी ना समझी के कारण कुएँ में गिर गईं थीं ओर उन्हें किसी भी हालत में निकालना बहुत ही जरूरी था नही तो घर पर जाकर मार पड़ती । इसी डर से लेखक ने उन्हें कुएँ में से निकालने का जोखिम भरा निर्णय लिया । वह अपनी और अपने भाई की धोती और कुछ रस्सी को मिलाकर नीचे उतरा मगर साँप से फिर भी 4–5 गज ऊपर ही रहा उसके ठीक नीचे साँप फन फैलाए बैठा था । डंडा घुमाने की भी जगह नहीं थी और रस्सी से लटककर भी नहीं मारा जा सकता था । डंडे से चिथ्ट्ठयाँ सरकाने के चक्कर में साँप डंडे से लिपट गया , उसके हाथ से डंडा छूट गया , पैर दीवार से हटते ही वह धोती से लटक गया , उसने मिट्टी साँप के फन पर फेंकी साँप का ध्यान बँटते ही लेखक ने चिट्ठियाँ उठा लीं ।

**प्रश्न 7:**
इस पाठ को पढ़ने के बाद किन–किन बाल–सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है ?

**उत्तर 7:**
1. बगीचों और खेतो मे जाकर शरारतें करना पेड़ों पर चढ़कर फल तोड़ना ।

2. शरारतें करते हुए स्कूल जाना ।

3. रास्ते में पड़ने वाल कुएँ तालाब आदि में पत्थर फेंकना ।

4. जानवरों को तंग करना ।

5. अपने आप को सबसे बहादुर और होशियार समझना ।

**प्रश्न 8:**
' मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी–कभी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं ' – का आशय स्पष्ट कीजिए ।

**उत्तर 8:**
कोई भी मनुष्य समय और परिस्थिति के अनुसार भावी योजनाएँ बनाता है और उसी के अनुसार कार्य भी करता है , परन्तु वह योजनाएँ कभी–कभी उल्टी भी पड़ जाती हैं जिस कारण मनुष्य जो चाहता है वह नहीं हो पाता अतः कल्पना और वास्तविकता में अंतर आ जाता है जो प्रतिकूल परिणाम भी दे सकता है जैसा कि लेखक के साथ साँप का सामना करते समय हुआ ।

**प्रश्न 9:**
' फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है '–पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर 9:**
लेखक यह सोचकर कुएँ में उतरा था कि या तो उसे साँप काट लेगा या वह चिट्ठयाँ उठाने में सफल होकर लौटेगा इसलिए भयंकर परिणाम की चिंता किए बिना ही वह कुएँ में उतर गया और अपने उद्देश्य में सफल रहा । इसलिए हमें केवल अपना कर्म ही करना चाहिए फल कैसा मिलेगा यह ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए । परन्तु यह भी सत्य है कि दृढ़ निश्चय करके कार्य करने वाले हमेशा ही अपने उद्देश्य में सफल होते हैं ।